चेदि सातवाहन अभिलेख

1. खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
(Hathigumpha Inscription of Kharvel)

स्थान : हाथीगुम्फा—भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ी, जिला—पुरी, उड़ीसा

लिपि : ब्राह्मी।

काल : लगभग प्रथम शती ई॰ पू॰ का उत्तरार्द्ध

विषय : चेदिवंशी राजा कलिंगाधिपति खारवले के जीवन की घटनाओं का क्रमिक विवरण एवं उसकी राजनैतिक उपलब्धियों तथा लोकमंगल के कार्यों का उल्लेख

मूल पाठ

1. नमो अरहंतानं[।] नमो सव-सिधानं [।।] ऐरेण महाराजेन[1] महावेघवाहनेन[2] चेति[3]-राजव ( ) स–वधनेन पसथ-सुभ-लखनेन[4] चतुरंत लुठण-गुण उपितेन[5] कलिंगाधिपतिना सिरि-खारवेलेन

2. [पं] दरस-वसानि सीरि–[कडार]-सरीर-वता कीडिता कुमार-कीडिका [।।] ततो लेख-रूप-गणना-ववहार-विधि-विसारदेन सव-विजावदातेन नव-वसानि योवरज [प] सा-सितं [।।] संपुंण-चतुवीसति-वसो तदानि वधमान-सेसयो-वेनाभिविजयो[6] ततिये

3. कलिंग-राज-वंसे पुरिस-युगे महाराजाभिसेचनं[7] पापुनाति [।।] अभिसितमतो च पधमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसनं पटिसंखारयति कलिंगनगरि खिबी [रं][8] [।] सितल-तडाग-पाडियो च बंधापयति सवूयान प [टि] संथपनं च

---

1. "महाराज की उपाधि सर्व प्रथम यवन-भारतीय शासकों के सिक्कों पर मिलती है जो द्वितीय शताब्द के पूर्वाद्ध के हैं। इससे खारवेल की प्रथम शताब्दी में होने की संभावना व्यक्त होती है।—सरकार
2. महामेधवाहन यह वंश का नाम है जैसे—सातवाहन।
3. कुछ लोग इसे चेत पढ़ते हैं। चेति = चेदि तथा चेत = चैद्य. खारवेल अपने को चेदि वंश का मानता है।
4. बरुआ का पाठ : लखणेन
5. बरुआ : गुण-उपेतेन; जायसवाल : ॰ लुठितगुणोपहितेन
6. बरुआ : वधमान-सेसयोवनाभिविजयो
7. जायसवाल : माहा॰
8. जायसवाल और बनर्जी : ख़िवीर-इसि-ताल-तडाग

4. कारयति पनति [सि ?] साहि सत-सहसेहि पकतियों च रंजयति [।।] दुतिये च वसे अचितयिता सातकंनि[1] पछिम-दिंस हयं-गज-नर-रध-बहुलं दंडं पठापयति [।] कन्हबेंण-गताय[2] च सेनाय वितासिति[3] असिकनंगरं[4] [।] ततिये पुन वसे
5. गंधव-वेद-बुधो दप-नत गीत-वादित-संदसनाहि उसव-समाज-कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [।।] तथा चवुथे वसे विजाधराधिवासं[5] अहतपुवं कलिंग-पुव-राज-[निवेसितं]...वितध-म [कु] ट[6] ...च निखित = छत
6. भिंगारे [हि] त-रतन-सपतेये सव-रठिक-भोजके पादे वंदापयति [।।] पंचमे च दानी वसे नंदराज-तिवससत-ओ [घा] टितं[7] तनसुलिय-बाटा पणाडिं नगरं पवेस [य] ति सो....[अ] भिसितो च [छठेवसे] राजसेयं[8] संदंसयंतो सवकर-वण–[9]
7. अनुगह अनेकानि सत सहसानि विसजति पोर-जानपदं [।।] सतमं च वसे[10] (पसा) सतो वजिरधर....[11] स मतुक पद.....[कु] म.....[12] [।] ....अठमे च वसे महता सेना...गोरधगिरिं
8. घातपयिता राजगहं[13] उपपीडयति [।] एतिन [।] कंमपदान — स [ ] नादेन....सेन — वाहने[14] विपमुचितं मधुरं अपयातो यवनरा [ज] [डिमित][15].....यछति.....पलव
9. कपरुखेहयगजरथसह यति[16] सवघरावास.....[17] सव-ग्रहणं च कारयितुं ब्राह्मणनं ज [य] परिहारं[18] ददाति [।] अरहत......[नवमे च वसे]....

---

1. पुराणों के अनुसार यह सातकर्णी नग्रीका के पति के कुछ ही बाद का शासक था। कुछ लोगों ने इसकी समता सातकर्णी I से की है।
2. जायसवाल और बनर्जी का पाठ : कञ्हं ०
3. जायसवाल का पाठ : वितासितं
4. जायसवाल के अनुसार पाठ है सुसिक = (असिक)
5. विद्याधर = सम्भवतः यह किसी राजा का नाम है।
6. इसके बाद के अक्षर हैं जायसवाल के अनुसार सबिलदित बरुआ के अनुसार रूविप्रवजिते।
7. नन्द से अभिप्राय पाटलिपुत्र के एक नन्द राजा से है। यहाँ 'तिवससुत' = 300 या 103 वर्ष। यदि इससे 103 वर्ष पूर्व नन्द राजा की स्थिति को माने तो वह 223 ई० पू० में पड़ेगा तो अशोक का काल था। इससे 300 वर्ष पूर्व ही लेना उचित है जब पाटलिपुत्र पर नन्द वंश का शासक महापद्मनन्द शासन करता होगा।
8. जायसवाल ने इसे राजसूय राजा माना है जो खारवेल की तरह जैन था।
9. *Varna* here means 'description" as in No. 82, line 6, above.
10. बरुआ : सतमे च वसे [अ]स-सतो
11. बरुआ : वजिरघर-खतिय-सत-घटनि-समतक-पदषंन संतिपद.....; जायसवाल ० घरवलि-घुसित-घगिनि स मतुक-पद-पुंग....
12. इसका कोई भी पाठ अभी तक युक्ति संगत नहीं किया गया है। अतः सत्रहवें वर्ष की उपलब्धि संदिग्ध है।
13. प्रिंसेप का पाठ राजगभं उपपीडयति; कानिंघम : राजगंभु उपपीडयति; इन्द्रजी : राजगहनपं पीडापयति गोरधगिरि = बराबर की पहाड़ियाँ। कुछ लोगों के अनुसार गोरधगिरि नामक राजा था जिसकी राजधानी राजगिर थी। पर यह असंभव समता है।
14. प्रिंसेप : पंबात; जायसवाल : संबित
15. पाठ स्पष्ट है यवनराज पर दिमित डिमित
16. जायसवाल : सह-यंते
17. कनिंघम : घरवसय-अनतिकगवय; इन्द्रजी : घरवसधं...;
18. जायसवाल : जातिं परिहारं

10. .....[1] महाविजय-पासादं[2] कारयति अठतिसाय सत-सहसेहि [॥] दसमे च वसे दंडसंधीसा [ममयौ][3] भरघवस-पठा नं मह [ि] जयनं [?][4]...कारापयति[5] [॥] [एकादसमे च वसे].... प [ा] यातानं च म [नि] रतनानि उपलभते

11. ...पुवं राज-निवेसितं[6] पीथुंडं गदभ नंगलेन कासयति [।] जन [प] दभावनं च तेरस वससत कतं[7] भि [ ] दति त्रमिरदह [?] संघातं[8] [।] बारसमे च वसे...[9] [सह] सेहि वितासयति उतरापध राजानो....

12. म [ा] गधानं च विपुलं भयं जनेतो हथसं गंगाय[10] पाययति [।] म [ाग] ध [।] च राजानं बहसतिमितं[11] पादे वंदापयति [।] नंदराज-नीतं च का [लि] ग-जिनं[12] संनिवेस...[13] अंग-मगध वसुं च नयति [॥]

13. ...(कं) जठर-[लखिल] [गोपु] राणि सिहराणि निवेसयति सतविसिकनं [प] रि [हारेहि] [।] अभुतमछरियं च हथीनिवा [स][14] परिहर....हयहथिरतन[मानिकं] पंडराजा...[भु] त-मनिरतनानि आहरापयति इध सत [सहसानि]

14. ...सिनो वसीकरोति [।] तेरसमे च वसे सुपवतविजयचके कुमारीपवते अरहते [हि] परिवन-सं [सि] तेहि कायनिसीदियाय[15] यापूजावकेहि[16] राजभितिनि चिनवतानि वासा [।] [सि] तानि पूजानुरतउवा [सगखा] रवेलसिरिना[17] जीवदेह [सयि] का परिखाता[18] [॥]

15. ...सकत-समण सुविहितानं च सव-दिसानं ञ [नि] नं [?] तपसि–इ [सि] न संघियनं अरहतनिसीदिया-समीपे पाभारे[19] वराकार-समुथापिताहि अनेक-योकना-हिताहि.... सिलाहि[20] .....[21] ....

---

1. जायसवाल : मानतिराजसंनिवासं
2. जायसवाल : महाविजयं
3. कनिंघम : दतिभिसर
4. कनिंघम : महयन
5. ग्यारहवें वर्ष के राज्य के विषय में कोई निश्चित ज्ञान नहीं है।
6. पुवराज-निवेसितं पिथुडग-दभ नगले नेकासययि,
7. जायसवाल : सतिकं अभि-, संभवतः यह संख्या 1300 है न कि 113.
8. इन्द्रजी : तमर-देह-संघातं ;
9. बरुआ के अनुसार : सिवकानं.
10. जायसवाल : हथी सुगंगीय [ ] पाययति मौर्य राजमहल का संदर्भ है सुगांग जो मुद्राराक्षस में उल्लिखित है।
11. यह नाम है वृहस्पतिमित्र; हैन्सिकी समता पुष्यमित्र से की गई है क्योंकि वृहस्पति स्वामी है पुष्य नक्षत्र का।
12. बरुआ : नंदराज-जितं च कलिंगजन-सनिवेसं
13. इन्द्रजी : गह-रतन-परिहारेहि ; जायसवाल : ० पडीहारेहि
14. प्रिंसेप हथिन न ; कनिंघम : हथि-नवेन ;
15. बरुआ : कय्य (सं०/पा०) = कल्य = कल्ल
16. जायसवाल : यापुहवकेहि; यापञवकेहि
17. पाठ : सितानं
18. बरुआ : पनिखाता
19. बरुआ : पकव्सिसेहि सत[सहसा]हि सिलाहि
20. जायसवाल सिंहपथ : सिजप.
21. बरुआ : अभ[नि] वधसयाना[स]नानि

16. ....[1] चतेरे च वेडुरिय-गभे थभे पतिठापयति पानतरीय-सत सहसेहि [।] मु [खि] य[2]-कल[3]-वौछिनं च चोय [ठि]-अंग[4] संतिक[5] [ ] तुरीयं उपादयति [।] खेम-राजा स वढ-राजा स भि-राजा धम-राजा पसं [तो] सुनं [तो] अनुभव [तो] कलानानि असुभव [तो]

17. ...गुण-विसेस-कुसलो सव-पासंड पूजको सब-दे [वाय] तन-सकार कारको अपहितचक-वाहनबलो चकधरो गुतचको-पवतचकी-राजसि-वसू-कुल-विनिश्रितो[6] महाविजयो राजा खारवेलसिरि [।।]

हिन्दी अर्थान्तर

1. अर्हतों को नमस्कार। सब सिद्धों को नमस्कार। आर्य, महाराज, महामेधवाहन, चेदिराज के वंशवर्धन करने वाले, प्रशस्त एवं शुभ लक्षणयुक्त चतुर्दिक प्रशस्त गुणों से पूर्ण, कलिंगाधिपति श्रीखारवेल ने

2. पन्द्रह वर्ष तक धूल धूसरित शरीर से बाल क्रीड़ा किया। तदनन्तर लेख, रूप, गणना तथा व्यवहार-विधि में विशारद, सभी विद्याओं (ज्ञान) से प्रकाशित नववर्षों तक युवराज पद पर बना रहा। इस प्रकार 24 वर्ष पूर्ण होने पर, शैशव से वर्धमान पृथु के समान विजय करने वाला वह युवा होने पर

3. कलिंग राजवंश की तीसरी पीढ़ी में राज्याभिषेक प्राप्त किया। अभिषिक्त होने के प्रथम वर्ष तीव्र वायुवेग से क्षतिग्रस्त गोपुर एवं प्राकार पुनर्निर्मित कराया।

4. कलिंग नगरी के दुर्गों का जीर्णोद्धार कराया। शीतल जल युक्त सीढ़ियों से अलंकृत तड़ागों को बनवाया। 35 लाख मुद्रा खर्च कर प्रजा का रंजन किया। द्वितीय वर्ष में शातकर्णि का विचार न करके पश्चिम दिशा में बहुत से घोड़ों, हाथियों, पैदल सैनिकों तथा रथों से युक्त बहुत बड़ी सेना को भेजा और कृष्णवेणा तट पर गई हुई सेना द्वारा मूषिकनगर को त्रस्त किया।

5. पुनः तीसरे वर्ष में गान्धर्व शास्त्र के ज्ञाता खारवेल द्वारा मल्ल, नृत्य, गीत, वादन, प्रदर्शन तथा उत्सव एवं समाज के द्वारा, नगर के लोगों का मनोविनोद किया तथा चौथे वर्ष में पूर्वकाल में अक्षत, कलिंग के पूर्व राजाओं द्वारा निर्मित विद्याधरों के अधिवास (नगर) को....वितथकिरीट तथा क्षिप्तक्षत्र—

6. शृंगार एवं रत्नसम्पत्ति सब राष्ट्रिकों एवं भोजकों से छीना और उनसे पद वन्दना कराया। पाँचवें वर्ष में नन्दराज द्वारा 300 वर्ष पूर्व उद्घाटित तनसुलीय नहर को नगर में प्रविष्ट कराया। राज्याभिषेक के छठें वर्ष राजैश्वर्य को प्रदर्शित करते हुए सब वर्णों

7. पर अनुग्रह करते हुए लाख मुद्राओं को पौर और जनपद पर व्यय किया। प्रशासन के सातवें वर्ष वाजिरधर की रानी से उसे पुत्र उत्पन्न हुआ। आठवें वर्ष महती सेना.....(द्वारा) गोरथगिरि को

8. नष्ट कर राजगृह को पीड़ित किया, इस कार्य के सम्पादन में होने वाले शब्द से....सेना एवं वाहन के भय से छोड़कर यवनराज डिमित मधुरा (मथुरा) भाग गया।

1. इन्द्रजी : पटालके
2. स्टोनकोनो : सुरिय ; बरुआ : [म]खिय
3. इन्द्रजी : काल ; Cunningham कल which is supported by Barua.
4. बरुआ : च चोयठ अंगे
5. स्टोनकोनो : संतिकं
6. बरुआ : राजिसि-वंस-कुल

9. घोड़ों, हाथियों तथा रथों सहित गया सब गृहवास....और सब को ग्रहण कराने के लिए (सब के स्वीकार के लिये ?) ब्राह्मणों को जयोपलब्ध प्रदान किया।—नवें वर्ष में

10. 1138 मुद्राओं द्वारा महान विजय-प्रसाद बनवाया। दसवें वर्ष दण्ड-सन्धि साम-नीतियुक्त खारवेल ने (सेना) का भारतवर्ष की महती विजय हेतु प्रस्थान....कराया। तथा ग्यारहवें वर्ष....पलायित राजाओं का मणिरत्न ग्रहण किया।

11. पूर्व राजा की राजधानी पिथुण्ड नगर को गदहों से जुतवाया। जनपद के लिए 1300 वर्षों में बने त्रिमिरहद का भेदन किया तथा बारहवें वर्ष......हजारों सैनिकों द्वारा उत्तरापथ के राजा को भयाक्रान्त किया....

12. मागधों में अत्यधिक भय उत्पन्न करते हुए हाथियों तथा घोड़ों को गंगा में जल पान कराया। मगध के राजा वृहस्पतिमित्र से अपने चरणों की वन्दना करायी। नन्दराज द्वारा (पाटलिपुत्र) ले जायी गई कलिंग से जिन (की प्रतिमा) को वहाँ वापस लाया। ....अंग तथा मगध का धन ले गया।

13. दृढ़ एवं सुन्दर गोपुर के शिखरों को बनवाने के लिए 100 विंशक मुद्रायें व्यय की, अद्भुत तथा आश्चर्यजनक हस्ति निवास को अपहृत किया.....घोड़े, हाथी तथा रत्न-माणिक्य; पाण्ड्य राजा से 1100 मुक्ता एवं मणिरत्न छीन कर यहाँ ले आया....

14. वासियों को वश में किया। तेरहवें वर्ष में विजयचक्र के सुप्रवर्तित होने पर जीर्ण आश्रय वाले धर्मोपदेशक अर्हतों के कार्यविश्राम–हेतु राजपुष्ट व्रतों का आचरण करने वाले, वर्षाश्रितों की पूजा में अनुरक्त, उपासक श्री खारवेल द्वारा कुमारी पर्वत में आश्रय-गुहायें खुदवायी गयीं।

15. श्रमणों को सत्कृत करने वाले ने संघीय, सर्वदेशीय, सुविहित ज्ञानी, तपस्वी, ऋषियों का पर्वतपृष्ठ में अर्हत विश्रामावास के समीप कई योजनों से लाई गई, सुष्ठु प्रकार से स्थापित की गई शिलाओं द्वारा

16. चत्वर में अन्तरभाग में वैदूर्ययुक्त 1105 मुद्राओं द्वारा, स्तम्भ स्थापित किया। (गीत नृत्यादि) प्रमुख कलाओं से समन्वित चौसठ प्रकार के वाद्यों से पूर्ण शक्तिकालीन सूर्य को उत्पन्न किया। क्षेमराज, वृद्धराज, धर्मराज, कल्याणों को देखते, सुनते और अनुभव करते हुए

17. गुणों में विशेष निपुण, समस्त पार्षदों का पूजक, सभी देव प्रतिमाओं का संस्कार करने वाला, अप्रतिहत चक्र तथा सैन्यबल वाला, राजचक्र धारण करने वाला, सुरक्षित राजचक्र वाला, प्रवृत्त राजचक्र वाला, राजर्षि वसु-कुलोत्पन्न, महाविजयी राजा श्री खारवेल।

ऐतिहासिक महत्त्व

कलिंग देश जिसमें आज का पुरी, गंजाम और कटक जिला सम्मिलित एक शक्तिशाली राज्य था उसमें दक्षिण के कुछ तेलगू भाषी क्षेत्र भी कभी सम्मिलित रहे। मगध के पड़ोसी होने से मगध शासक सदा इसे अधीन रखने और यह स्वतंत्र रहने के प्रयास में रहता था। प्लीनी के अनुसार कलिंगी जाति की राजधानी पार्थलिस थी जो अशोक के अभिलेखों का तोषली रहा होगा। सम्भवतः मेगस्थनीज के आधार पर प्लीनी कहता है कि इसके पास विशाल सेना थी।

कलिंग का इतिहास बड़ा ही अनिश्चित है। नन्दराजाओं के समय यह मगध के अधीन था। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य तथा बिन्दुसार के समय इसने मगध की अधीनता स्वीकार किया या नहीं यह संदिग्ध है। फिर अशोक के समय इसके इतिहास का ज्ञान मिलता है कि अशोक ने इसे विजित

किया था। इसके बाद यह कब तक मगध के अधीन बना रहा नहीं कहा जा सकता। उड़ीसा के उदयगिरि पहाड़ी में निर्मित हाथीगुफा से एक लेख प्राप्त हुआ है जिससे इसके बाद के इतिहास पर कुछ प्रकाश पड़ता है। यहाँ का एक स्वतन्त्र राजा खारवेल था। जिसके सम्बन्ध में इस लेख से कलिंग के इतिहास की तत्कालीन घटनाओं का ज्ञान मिलता है।

संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मीलिपि का यह अभिलेख कलिंगाधिपति खारवेल के जीवन के प्रारम्भिक 13 वर्षों तक का क्रमिक एवं विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार से वर्षानुसार क्रमिक विवरण देने वाले किसी भी दूसरे लेख का ज्ञान भारतीय इतिहास में नहीं है। इसकी कुछ पंक्तियाँ इतनी घिस चुकी हैं कि पढ़ना और क्रम बैठाना अत्यन्त दुरूह एवं कल्पनाजनित हो गया है। इन संदिग्ध पंक्तियों की प्रामाणिकता किसी भी दूसरे स्रोत से सिद्ध नहीं होती क्योंकि खारवेल के विषय में और कहीं से ज्ञान का कोई आधार नहीं मिलता।

इस अभिलेख के संबंध की दो समस्याएँ आज भी अनिर्णीत हैं और इतिहासकारों के लिए चुनौती बनी हैं—एक कि इसे किसने उत्कीर्ण कराया ? तथा दूसरे खारवेल की तिथि क्या है ?

प्रस्तुत अभिलेख में खारवेल को चेतिवंशीय शासक कहा गया है। डा० चन्दा के अनुसार वेसन्तर जातक में इस वंश का उल्लेख है। मिलिन्दपञ्हो के अनुसार चेति वंश का सम्बन्ध चेदि वंश से है। चेदियों ने बुन्देलखण्ड में बहुत दिनों तक शासन किया था। यहीं से दक्षिण कोशल होते हुए कलिंग गए होंगे जैसे अनुश्रुति से ज्ञात होता है। ये 'ऐरेण' डा० राजबली पाण्डे के अनुसार ऐलवंशीय या चंद्रवशींय क्षत्रिय थे। यही उपयुक्त लगता है क्योंकि यह चंद्रवंशीय राजर्षि वसु के परिवार से उत्पन्न हुआ था। सरकार ने ऐरेण का अभिप्राय आर्य लिया है। जो संभवतः इन्हें उड़ीसा के आर्येत्तर लोगों से अलग रखने के लिए कहा गया होगा। खारवेल के लिए अभिलेख के प्रारम्भ में ही तीन विशेषणों का प्रयोग किया गया है—खारवेल, कलिङ्गाधिपति, महाराजा महामेघवाहन। श्री बरुआ का विचार है कि इसका सम्बन्ध पुराणों में वर्णित मेघवंश से है जो मेघवाहनवंश था। पर पुराणों के अनुसार मेघवंश का राज्य कोशल में था किन्तु इस अभिलेख में खारवेल का राज्य कलिङ्ग में बताया गया है। सम्भवतः यहीं से ये कलिंग गए होंगे। इस वंश को चेदिवंश कहा गया है। डा० विमल चन्द्र पाण्डेय ने मेघवाहन को इसके वंश का एक राजा माना है। पर इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है। यह प्रथम भारतीय नरेश है जिसने महाराज की उपाधि धारण की थी। इसका अभिप्राय इन्द्र से भी लिया गया है।

कलिंगाधिपति से स्पष्ट है कि खारवेल कलिङ्ग का राजा था और शौर्य में महामेघवान अर्थात् मेघ वंश में इन्द्र के समान पराक्रमी था। यहाँ यह भी उल्लेख है कि चेदि राज्य में बसने के कारण ये चेदिवंशीय कहलाए और इसी की एक शाखा उड़ीसा में शासन करने लगी थी। सम्भवतः उड़ीसा के चेदिवंशीय शासकों में खारवेल तीसरी पीढ़ी में शासक था। पहला नाम वसु का मिलता है (वसु-कुल-विनिश्रितो) मंचपुरी गुहा (उदयगिरि पहाड़ियों में) के निचले मंजिल का निर्माण उसके अभिलेखानुसार महामेघवाहन वंश के वक्रदेव ने कराया था जिसकी ऊपरी मंजिल वहाँ के दूसरे अभिलेख के अनुसार खारवेल की पटरानी द्वारा कराया गया था जो उनके बाद की पीढ़ी की रही होगी क्योंकि ऊपरी मंजिल निचली (वक्रदेव) मंजिल के बाद बना होगा। अतः इस वंश में क्रमशः वसु → वक्रदेव → खारवेल शासक रहे होंगे। इनमें केवल खारवेल के विषय में ही ज्ञान प्राप्त है। अर्हत और सिद्धों को प्रणाम करते हुए प्रारम्भ होता यह लेख खारवेल को जैन धर्मानुयायी बताता है।

इसके बाल्यकाल के विषय में ज्ञात होता है कि पंद्रह वर्ष की अवस्था तक खारवेल एक सामान्य बालक का जीवन व्यतीत करता रहा। उसके बाद वह 9 वर्षों तक युवराज बना रहा। इस समय वह विभिन्न विद्याओं का अध्ययन किया जिनमें लेख, रूप, गणना, व्यवहार, विधि का विशेष उल्लेख है। इस प्रकार (15 + 9) 24 वर्ष में 'पुरुष युग'—पूर्ण युवा अवस्था को प्राप्त होने पर वह कलिङ्ग का राजा बना दिया गया। इससे स्पष्ट है कि तब सिंहासन खाली था। चाहे उसका पिता मर गया हो या राज्य त्याग दिया हो।

राजा होने के प्रथम वर्ष इसने बवण्डरों से गिरे हुए गोपुर और प्रासाद को पुनर्निमित कराया तथा 35,00,000 द्रव्य व्यय करके बगीचों एवं शीतल जलाशयों का निर्माण कराया।

दूसरे वर्ष बिना शातकर्णी की चिन्ता किए हुए उसने पश्चिम की ओर आक्रमण किया। इसके अतिरिक्त कश्यप क्षत्रियों की सहायता के लिए इसने मूषिक नगर को विनष्ट कर दिया। यहाँ खारवेल का युद्ध सातवाहनों से होना नहीं बताया गया है। सप्तकर्णी की चिन्ता न करते हुए सेना भेजने से लगता है कि मुसिक नगर सातवाहानों के प्रभाव में रहा होगा। यहाँ वर्णित सातकर्णी कौन था ? विवादास्पद है। पर आगे पृष्ठों में खारवेल की तिथि में देखेंगे कि उसका काल, लिपि, आन्तरिक विवरण तथा नन्द काल आदि के आधार पर इसे प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ में मानना उचित है। जबकि सातकर्णी प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ के अन्तिम चरण में शासन करता था।

तीसरे वर्ष उसने अपने विजय के उपलक्ष्य में उत्सव मनाया तथा अपने साम्राज्य की जनता का मनोरंजन किया।

चौथे वर्ष पुनः इसे रठिक और भोजकों पर आक्रमण कर उनके छत्र और स्वर्ण पात्र तोड़ दिए, रत्न-सम्पत्ति छीन ली और चरणों में झुकने के लिए बाधित किया तथा विद्याधरों के अधिवास और उनके वितथ मुकुट हो जाने की चर्चा है। इस संदर्भ में जैन सम्प्रदाय के विद्याधर के नाम लेने से लगता है कि रठिक और भोजकों को जीतना उद्देश्य नहीं था बल्कि विद्याधर सम्प्रदाय की सुरक्षा के लिए युद्ध हुआ था। अतः रठिक और भोजकों को खारवेल ने अपने साम्राज्य में जोड़ा नहीं।

पाँचवें वर्ष में नन्द राजा द्वारा 300 वर्ष पूर्व निर्मित तनसुलीय नामक नहर को उसने अपनी राजधानी में, सिंचाई की सुविधा प्रदान करने के लिए, बढ़ावा दिया।

छठें वर्ष अपने पुर तथा जनपद के लोगों को 1,00,000 मुद्राओं के व्यय से अनेक सुविधाएँ प्रदान किया।

सातवें वर्ष वाजिरधर की रानी से इसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

आठवें वर्ष इसने राजगृह को आतंकित किया और राजगृह के बाह्य भाग गोरथगिरि पर तूफान की तरह यह चढ़ कर वहाँ की जनता को उत्पीड़ित किया। इससे दिमित (डेमेट्रियस ?) डर कर अपनी सेना और वाहनों के साथ भाग गया। डेमेट्रियमस के साथ कुछ लोग दिमित की समता स्थापित करते हैं। पर यह द्वितीय शताब्दी ई॰पू॰ का शासक था जो खारवेल के समकालिक नहीं हो सकता। अतः यह कोई पूर्वी पंजाब और मथुरा का स्थानीय हिन्द-यवन शासक रहा होगा। पुनः अब यह पाठ भी गलत बताया जा रहा है।

नवें वर्ष मगध की विजय को मनाने के लिए इसने एक महाविजय प्रासाद का निर्माण कराया तथा हाथी, घोड़े और घुड़सवारों को ब्राह्मणों को दान दिया।

दसवें वर्ष उसने भरधवस (भारतवर्ष) पर फिर आक्रमण किया। यहाँ भारतवर्ष से अभिप्राय उत्तरापथ से है पर इस आक्रमण का प्रभाव किन पर पड़ा ज्ञात नहीं। लगता है वह लूट-पाट करके ही लौट गया होगा।

ग्यारहवें वर्ष उसने दक्षिण की ओर अपना ध्यान आकृष्ट कर पिथुण्ड नगर को गदहों से जुतवाया तथा पलायित शत्रुओं का मणि-रत्न प्राप्त किया। इसी वर्ष द्रविण राजाओं के संघ को इसने तोड़ दिया। पिथुण्ड नगर टालमी के अनुसार मूसल की राजधानी था जो कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच स्थित था।

बारहवें वर्ष उत्तरापथ पर इसने आक्रमण कर राजाओं को उत्पीड़त किया। फिर मगध की ओर गया। वहाँ उसने अपने हाथी और घोड़ों को उत्पीड़ित किया। फिर मगध की ओर गया। वहाँ उसने अपने हाथी और घोड़ों को गंगा में जल पिलाया। मगध का राजा वृहस्पतिमित्र इसके पैरों पर झुक गया। कलिङ्ग में स्थापित जैन मूर्ति, जो नन्द राजा पाटलिपुत्र ले गए थे, उसे वापस लाकर कलिंग में पुनः स्थापित किया। इस विजय अभियान में वह मगध तथा अंग से बहुत अधिक धन जीत लिया था। इसके बाद दक्षिण में पाण्डयों पर भी इसने विजय किया तथा वहाँ से कलिङ्ग में 10,000 मणि और मोती लाया तथा पर्वत की चोटियों को गोपुरों और प्रासादों से सुशोभित कराया। डा० काशीप्रसाद जायसवाल ने वृहस्पतिमित्र की तुलना पुष्यमित्र से किया है क्योंकि दोनों के नामों के अन्त में मित्र शब्द है एवं ज्योतिष में वृहस्पति को पुष्य नक्षत्र का स्वामी माना गया है। इसलिए वह मानते हैं कि यहाँ पुष्य के स्थान वृहस्पति लिखा गया है। पर यह धारणा मान्य नहीं प्रतीत होती क्योंकि मगध के शासन के तेरहवें वर्ष खारवेल ने कुमारी खलतिक पर्वत पर जैनों की एक सभा बुलायी और मन्दिर बनवाया। इस सभा में जैन धर्म के आठों अंगों और चौसठों कलाओं को पुनः संगठित किया गया।

इसके बाद उसने आनन्दमय जीवन व्यतीत किया और अपने देश में जनता का गौरव पुनः स्थापित किया। उसका अपने साम्राज्य में आदर था तथा वह विभिन्न गुणों से युक्त और कलाओं से सम्पन्न था। उसका साम्राज्य अत्यन्त विस्तृत था।

अभिलेख की समस्याएँ

इस अभिलेख में निम्नांकित समस्याओं की ओर ऐतिहासिकों का ध्यान आकर्षित होता है :

1. खारवेल वसु के परिवार का बताया गया है। वसु महाभारत में कुरुवंश के पौरव राजा के परिवार का पाँचवाँ शासक कहा गया है। उसने सम्राट तथा चक्रवर्तिन की उपाधि धारण की थी। उसके राज्य में मगध तथा मत्स आदि देश सम्मिलित थे। पर यह चेदि परिवार का नहीं था। चूँकि इसने यादवों से चेदि राज्य जीत लिया था इसीलिए इसकी उपाधि 'चेदिपरिचर' प्राप्त होती है।

2. खारवेल को 'ऐट' उपाधि से सम्बोधित किया गया है। डा० बनर्जी के अनुसार इसका संस्कृत रूप 'ऐल' है तथा उन्होंने इस नाम की समता पौरव की माता या पिता के नाम से किया है। बी० एम० बरुआ ने इसका संस्कृत रूप 'आर्य' माना है तथा अर्थ 'स्वामी' लिया है। डा० जायसवाल ने भी इसी समता को स्वीकार किया है पर इसके प्रयोग का कारण कलिङ्ग में रहने वाले द्रविणों से इसकी भिन्न स्थिति को व्यक्त करना बताया है। डा० सुकुमार सेन ने 'ऐट' की समता वैदिक शब्द 'इर्य' से किया है जिसका अभिप्राय ईश्वर सम्प्रदाय के उपासकों से है, जो मान्य नहीं प्रतीत होता।

डा॰ दिलीप कुमार गांगुली ने 'आर्य' की ही समता को ठीक माना है तथा इसका प्रयोग उसको सम्मान प्रदान करने वाला कहा है।

3. खारवेल के पूर्व के शासकों का कोई भी ज्ञान हाथीगुम्फा अभिलेख से नहीं प्राप्त होता। इसके लिए डा॰ राखालदास बनर्जी ने दो कारणों के सम्भावना व्यक्त किया है—(i) चाहे तो अल्पायु में ही उसने गद्दी प्राप्त की हो अथवा (ii) उसका पैत्रिक पक्ष संदिग्ध रहा हो क्योंकि कलिङ्ग में किसी प्रकार का मातृसत्तात्मक परिवार रहा हो। पर ये दोनों सम्भावनाएँ अमान्य हैं क्योंकि खारवेल पुरुषयुग में गद्दी पर बैठा तथा तथा कलिङ्ग में मातृसत्तात्मक परिवार नहीं था। इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि चतुर्थ शताब्दी के पूर्व अभिलेखों में वंशावली के उल्लेख की परम्परा के अभाव के कारण यह कमी हाथीगुम्फा अभिलेख में भी प्राप्त होती है।

4. हाथीगुम्फा अभिलेख का 'महामेघवाहन' कौन था ? डा॰ दिनेश चन्द्र सरकार के अनुसार उक्त अभिलेख में महामेघवाहन इस वंश की तीन पीढ़ी के शासकों में प्रथम कहा गया है। जिसके अनुसार खारवेल का दादा कहा जा सकता है जो अमान्य है। एक फ्रांसीसी विद्वान के अनुसार सातवाहन की तरह महामेघवाहन (महा + मेघवाहन) दो शब्दों के योग से बना है। डा॰ बरुआ के अनुसार कलिंग के चेदि, पुराणों में वर्णित मेघवंशीय हैं। पर यह मान्य नहीं है क्योंकि मेघ कोशल में थे और चेदि कलिङ्ग में।

5. खारवेल की तिथि अत्यन्त विवादास्पद प्रश्न है जिसके निराकरण में विद्वानों नें मत वैभिन्य है। इसके लिए अभिलेख में दी गई नन्द राजा संबंधी तिथि जो उल्लिखित सामयिक राजा है, तथा सातकर्णी की पहचान के साथ ही इसकी पत्नी द्वारा मंजपुरी गुहालेख जैसे कुछ विन्दुओं को उभार कर उसके समाधान का प्रयास किया गया है यथा—

प्रस्तुत अभिले में चार ऐसे नाम हैं जिनको आधारस्वरूप लिया जा सकता है। ये हैं—वृहस्पतिमित्र, नन्द राजा, सातकर्णी और दिमित। इनकी पहचान ऐतिहासिक राजाओं से करके तिथि निर्धारण में सहायता ली जा सकती है क्योंकि ये सभी समसामयिक हैं। इन समीकरणों के आधार पर दो मत उभरे हैं—जायसवाल, बनर्जी, स्टेनकोनो ने इसे 2 शती ई॰ पू॰ का शासक माना है, जबकि दूसरे वर्ग के डा॰ चन्दा, बरुआ, रायचौधरी आदि इसे 25 ई॰ पू॰ अर्थात् प्रथम शताब्दी के प्रथम चरण का शासक माना है।

डा॰ काशी प्रसाद जायसवाल तथा बनर्जी के अनुसार यह दूसरी शती ई॰ पू॰ के पूर्वार्द्ध में सिंहासनासीन हुआ था। इसका आधार है अभिलेख में उल्लिखित दिमित को डेमेट्रियस तथा वृहस्पतिमित्र को पुष्यमित्र माना गया है। डा॰ भगवान लाल इन्द्र जी के अनुसार यह 103 ई॰ पू॰ में कलिङ्ग का शासक था। इन्होंने मौर्य काल (मौरियकाल) होने की सम्भावना को स्वीकार किया है जो 255 ई॰ पू॰ में स्थापित किया गया होगा तथा खारवेल के शासन का 13वाँ वर्ष मौर्यकाल का 165 वर्ष माना गया है। ब्यूलर ने नन्दराजा के पूर्व 103 तिथि को आधार मानकर 302, 226 ई॰ पू॰ के बीच इसका शासन बताया है। फ्लीट ने 154 ई॰ पू॰ इसकी तिथि माना है तथा स्मिथ ने 223 ई॰ पू॰। जगन्नाथ ने द्वितीय शती ई॰ पू॰ के प्रारम्भ में इसका शासन काल रखा है।

किन्तु इन सभी मतों के बीच मान्यता के लिए निम्नांकित आधारों पर हम अध्ययन कर सकते हैं—

वृहस्पति का पुष्यमित्र से, नन्द का नन्दिवर्धन से समता स्थापित कर जायसवाल प्रभृति अनेक विद्वान खारवेल को पुष्यमित्र का समकालीन और दूसरी ईस्वी पूर्व के पूर्वार्द्ध में मानते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लेख में मौरिय (मौर्य) सम्वत् के 165वें वर्ष का उल्लेख है। पर यह विचार कुछ मान्य नहीं है। श्री जायसवाल महोदय ने वृहस्पतिमित्र और पुष्यमित्र में समता स्थापित करने के लिए यह तर्क प्रस्तुत किया है कि वृहस्पति और पुष्य दोनों नाम समान उच्चारण के हैं तथा पुष्य नक्षत्र का स्वामी वृहस्पति है इसलिए वृहस्पति से अभिप्राय पुष्य से है। पर यह विचार पूर्ण काल्पनिक है। इस अभिलेख के लेखक ने ज्योतिष के इस समीकरण को यहाँ सीधे घुसेड़ा नहीं है। दूसरे अभिलेख में 'मगधं च राजनम् वृहस्पति मितम' का उल्लेख है। यहाँ स्पष्ट है कि मगध को हराने के साथ वृहस्पति मित्र को भी पराजित किया। सिक्कों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वृहस्पतिमित्र के सिक्के मगध तथा उसके पड़ोस पांचाल और कौशाम्बी से मिले हैं। जायसवाल ने इन सिक्कों को शुंग वंशीय माना है जो मान्य नहीं हो सकता क्योंकि शुंग शासकों ने सम्भवतः सिक्के चलाए ही नहीं। अतः भिन्न वंश शुंगों के बाद मगध का शासक बना होगा जिसके साम्राज्य में पांचाल और कौशाम्बी भी रहा होगा या वहाँ भी इस वंश की शाखा का शासन होगा। इन तीनों स्थानों से प्राप्त मित्र नामान्त सिक्कों की बनावट में एकरूपता होने से ये एक ही परिवार के माने जा सकते हैं। मगध से तीन भिन्न शासकों का सम्बन्ध ज्ञात होता है क्योंकि गया की वेदिका पर इनका नाम अंकित है। इसमें वृहस्पतिमित्र भी है। भास अभिलेख में भी इनका नाम है। अतः वृहस्पतिमित्र स्थानीय शासक था जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र रही होगी। इस अभिलेख में मौर्यकाल का पाठ भी गलत है। यह ज्ञात नहीं कि गुप्त सम्भवत् की तरह कभी मौर्य राजाओं ने भी अपना संवत् चलाया हो। सम्भवतः इसका सही पाठ है मुखीय कला। अशोक के अभिलेख उसके अभिषेक से काल निर्धारित करते हैं। यदि ऐसा होता तो वे मौर्य काल की गणना में लिखे गए होते। इस प्रकार इसमें उल्लिखित नन्दराजा की समता नन्दिवर्धन से नहीं की जा सकती। नन्दिवर्धन के विषय में कोई साक्ष्य नहीं मिलता कि वह कभी भी मगध का प्रतापी राजा रहा हो जिसने कलिङ्ग पर विजय प्राप्त किया तथा वहाँ नहर बनवाया जैसा कि अभिलेख में वर्णित है।

पुनः खारवेल दिमित के समकालीन था—दूसरी समस्या है। जब उसने गोरधगिरि पर आक्रमण किया तो उसके आने की बात सुन भय से दिमित पाटलिपुत्र से मथुरा भाग गया। यह दिमित यूनानी आक्रमणकारी डेमेट्रियस माना जाता है। पर 'दिमित' पाठ सर्वमान्य नहीं है न इसे डेमेट्रियस प्रथम ही माना जा सकता है। यवनों के भारतीय विजय का विवरण गार्गी संहिता में देते हुए कहीं भी पुष्यमित्र का नाम नहीं है। इस ग्रंथ के अनुसार यह आक्रमण शालिशुक मौर्य के बाद हुआ था। शालिशुक काल 206 ई० पू० में होगा जबकि पुष्यमित्र ने 184 से 148 ई० पू० तक शासक था। अतएव यह आक्रमण इसके पूर्व हुआ होगा। पर इस आक्रमण का नेता डेमेट्रियस था यह नहीं माना जा सकता। खारवेल और सातकर्णी समकालीन थे क्योंकि खारवेल ने सातकर्णी पर आक्रमण किया था। पर यह सातकर्णी कौन था ? क्योंकि सातवाहन वंश में कई सातकर्णी हुए हैं। खारवेल की तिथि प्रथम शताब्दी रही होगी जो सातकर्णी प्रथम की तिथि है। अतः यह सातकर्णी प्रथम के समकालीन था।

इस अभिलेख का 'नन्द' निश्चित ही महापद्मानन्द है जिसकी दिग्विजय पुराणों में दी गई है। अभिलेखानुसार इससे 300 वर्ष बाद खारवेल गद्दी पर बैठा। महापद्मानन्द का अन्तिम समय चौथी शती होगा (322 + 22 ई॰ पू॰)। अतः खारवेल का समय पहली शती ई॰ पू॰ मानना उचित लगता है। सिमुक सातवाहन वंश का संस्थापक तथा कण्डव वंश का अन्त करने वाला था। सातकर्णी उसीका भतीजा था। अतः खारवेल और सातकर्णी समकालीन थे जिनका समय पहली शती ई॰ पू॰ का उत्तरार्द्ध होगा। लिपि के आधार पर चन्दा का मत है कि इसकी लिपि बेसनगर गरुड़ स्तम्भ लेख (लगभग 2 शती ई॰ पू॰ के अन्तिम चरण) तथा नानाघाट अभिलेख (प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰) के पूर्वार्द्ध के बाद की है अर्थात् प्रथम शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अन्तिम चरण की होगी। पुरातात्विक आधार पर भी यही ठीक बैठता है क्योंकि मंचपुरी का गुहा शुंगकालीन भरहुत के स्थापत्य कला के बहुत बाद की है। राजगृह का शासक ब्रहस्पतिमित्र एक मामूली स्थानीय शासक था जिसे खारवेल ने परास्त किया। मगध की यह स्थिति कण्डव वंश के समय या उसके तुरन्त बाद की होगी। इन आधारों पर खारवेल का समय प्रथम शती ई॰ पू॰ उचित लगता है।

इसके बाद का इतिहास फिर अंधकार में विलीन हो जाता है।